ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-50-52**,YEAR-2015

चित्रकूट के कामदगिरि की ऐतिहासिकता

❑ **डॉ0 महेन्द्र कुमार उपाध्याय**

सारांश– *चित्रकूट भारत वर्ष का एक मात्र तीर्थ है, जिसका भौगोलिक विन्यास दो प्रदेशों में फैला हुआ है। यह, मध्यप्रदेश के उत्तर–पूर्व में सतना जनपद तथा उत्तर प्रदेश के दक्षिण–पूर्व में चित्रकूट धाम जनपद में स्थित है। जनपद का दो तिहाई भाग मध्यप्रदेश तथा उत्तर प्रदेश में पड़ता है। पैतृक जनपद बांदा की कर्वी एवं मऊ तहसीलों के क्षेत्र को समाविष्ट करके प्रसिद्ध समाज सुधार कशाहूजी महाराज के नाम पर दिनांक 13 मई, 1997 की जनपद छत्रपति शाहू जी महाराज नगर का सृजन किया गया और जन भावनाओं का सम्मान करते हुये दिनांक 08 सितम्बर, 1998 को जनपद का नामकरण चित्रकूट धाम किया गया ।*[1]

कामद गिरि चित्रकूट का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पर्वत है। यह जनपद के मुख्यालय कर्वी से लगभग 10 किमी. उत्तर–पश्चिम में स्थिति है। **रामायण** में इसे 'चित्रकूट पर्वत ' कहा गया है। मध्यकाल से चित्रकूट पर्वत को 'कामद गिरि' कहा जाने लगा और आज भी वह इसी नाम से लोक विश्रुत है । गोस्वामी तुलसीदास (1540–1623 ई.) के अनुसार इसका कामद गिरि नाम अर्थात् 'कामनाओं को पूर्ण करने वाला पर्वत 'भगवान श्रीराम की कृपा से पड़ा क्योंकि भगवान श्रीराम अपने वनवास काल में इस पर्वत पर अपनी पत्नी सीता जी के साथ रहते थे, इसलिए इसके दर्शन मात्र से ही दुःखों का नाश हो जाता है। –'कामद गिरि भेरामप्रसादा, अवलोकत अपहरत विषादा।[2] पर्वत के दर्शन मात्र से व्यक्ति का कल्याण हो जाता है तथा वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है।[3] **वराह पुराण** के अनुसार चित्रकूट पर्वत पर श्रीराम विष्णु रूप में विराजते हैं।[4] **नरसिंह पुराण** में वर्णित है कि श्रीराम यहाँ नराधिपत के रूप में पूजे जाते हैं।[5] यह पर्वत प्राकृतिक सम्पदा तथा जल स्रोतों से भरपूर था। यह वही पर्वत है जिसकी उपत्यका में श्रीराम ने अपने वनवास काल में पर्ण कूटी निर्मित कर निवास किया था। यह पर्वत श्रीराम से सम्बन्धित होने के कारण ही पवित्र नहीं माना जाता, बल्कि धनुषाकार होने के कारण इसे श्रीराम के धनुष का प्रतीक मानते हैं। **भट्टिकाव्य** में चित्रित है कि यह पर्वत इतना ऊँचा था कि इस ने सूर्य के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया था।[6] **स्कन्द पुराण** में भी इसी प्रकार का वर्णन है।[7] वस्तुतः 315 मी. ऊँची गोला कार चोटी मध्यान्ह में सूर्य को रोकने में अक्षम है।

जब भगवान श्रीराम चित्रकूट पहुँचे तब चित्रकूट पर्वत की सुन्दरता व आकर्षण, यहाँ के जीवों व वनस्पतियों की विविधता, प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कंद–मू ल–फल, यहाँ का स्वच्छ व निर्मल वातावरण देखकर अपने राजमहल के सुख को भूल गये। श्रीराम कहते हैं कि चित्रकूट में पुष्पों व फलों की मिश्रित सुगन्ध, पक्षियों का कलरव व मधुरगान, ऐसा आभास कराते हैं मानो यही अयोध्या हो।[8]

रामायण में चित्रकूट पर्वत की मनोहारी छटा का वर्णन श्रीराम ने सीता से इस प्रकार किया है–'हे शुभे! कल्याणी। इस पर्वत का दृश्यावलोकन करो। यहाँ अनेक प्रकार के पक्षी क्रीड़ा–कलरव कर रहे हैं, अनेक प्रकार की धातुओं से मंडित इस पर्वत के उत्तुंग शिखर अपनी गगनचुंबी छठा से मानों गगनवेधन कर रहे हैं। ऐसे मनोहर ऊत्तुंग शैल शि खरों से सुशोभित यह चित्रकूट अतीव सु शोभित हो रहा है।[9] श्रीराम सीता से पुनः कहते हैं–'हे भामिनी। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह चित्रकूट पर्वत पृथ्वी का हृदय विदीर्ण

उपाचार्य एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, जगद् गुरुरामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, (उ. प्र.) भारत

कर' मानो प्रकट हुआ है। चित्रकूट पर्वत का यह शिखर समस्त दिशाओं से देखने में सुन्दर दृष्टि गोचर हो रहा है।'[10] **रामायण** में वर्णित है कि विभिन्न प्रकर के खनिजों से युक्त इस चित्रकूट पर्वत की चोटी के प्रस्तरों में कुछ रजत की भांति चमकते हैं, कुछ लालिमायु क्त हैं, कुछ शुभ्रपीत, कुछ अपने रत्नों को छुपाये उ नकी आभा से दमक रहे हैं। कुछ में नीलम की चमक व कुछ में स्फटिक तथा कुछ पारे की भांति च मक रहे हैं। कालिदास ने चित्रकूट पर्वत के स्वरूप का चित्रांकन (चित्र सं. 1) करते हुये इसकी तुलना चट्टान पर प्रहार कर रहे एक मस्त, जंगली सांड के साथ किया है।[11]तुलसीदास ने इस पर्वत श्रेणी को स्वर्ग की चिन्तामणि और कल्प वृक्ष सदृश बताया है, जो युग–युगों से पृथ्वी पर जगमगा रहा है।[12] चित्रकूट पर्वत एक ऐसा अचल शिकारी है, जिसका निशाना पाप रूपी मृग की मारने में कभी विफल न हीं होगा।[13] वस्तुतः यह पर्वत संसार का सर्वश्रेष्ठ एवं पवित्र पर्वत है, इसे ईश्वर का स्थिर रूप माना गया है। का मदगिरि पर्वत के आधार के चारों ओर पथरी ला पैदल मार्ग सन् 1725 ई. में बुन्देला राजा छत्रसाल की रानीचाँ दकुँवरि ने बनवाया था , जिसका ब्रिटिश शासन ने सन् 1897 में पुनर्निर्माण करवाया था। सन् 1973 में लक्ष्मी नारायण ट्रस्ट, धनबाद (बिहार) द्वारा मार्ग का जीर्णो द्वार कराया गया। अब परिक्रमा मार्ग पर शेड भी लगा है तथा लेटी परिक्रमा करने वालों के लिये जिला प्रशासन द्वारा परिक्रमा मार्ग के एक किनारे लोहे की रेलिंग लगा कर सुरक्षित मार्ग बनाया गया है। श्रद्धालु इस पर्वत की पैदल तथा साष्टांग दण्डवत प्रदक्षिणा करते हैं। ऐसा मानना है कि प्रदक्षिणा का आरम्भ **रामायण काल** में हुआ था तथा सर्वप्रथम भरत ने राम की चरण पादुका लेकर अयोध्या लौट ने से पूर्व इस पर्वत की प्रदक्षिणा की थी।[14] अमावस्या को कामद गिरि की परिक्रमा का विशेष महत्व है।[15] इस में भी सोमवती और शनिश्चरै अमावस्या अधिक महत्वपूर्ण है। देश के विभिन्न प्रांतों से लाखों की संख्या में श्रद्धालु यहाँ आकर कामद गिरि की परिक्रमा द्वारा पुण्यार्जन कर अपने जीवन को धन्य बनाते हैं। प्रदक्षिणा पथ का प्रवेश द्वार मुखार बिन्द है। इस मन्दिर में भगवान राम का मुख स्थापित है (चित्र सं. 2)। पर्वत के 5 किमी. वृत्ताकार पथ के दक्षिणी भाग में वह स्थान है जहाँ राम–भरत मिलाप हुआ था, आज भी उन के पद चिन्ह वहाँ पत्थरों में अंकित हैं। जब राम और भरत का मिलन हुआ तो इससे उत्पन्न ऊर्जा से द्रवित होकर पत्थर मोम की भाँति पिघल गये तथा भूमि पर दरारें उत्पन्न हो गयी थीं, ऐसा विश्वास जन–मानस में दृढ़ीभूत है। भरत मिलाप मन्दिर देखने से भी यह स्पष्ट है। (चि त्र सं. 3) उपरोक्त विवरणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि चित्र कूट पर्वत जिसे गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने ग्रंथ **रामचरितमानस** में ' कामद गिरि ' नाम से अभिहित किया है, इसलिए पवित्र और सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि भगवान श्रीराम अपने वनवास में जब चित्रकूट आये तो सपत्नीक इसी पर्वत पर लगभग 12 वर्षों तक रहे। चूँकि भगवान राम का इस पर्वत पर निवास था इसलिए 'यह कामनाओं को पूर्ण करने वाला पर्वत ' तथा इस के दर्शन मात्र से दुःख विनष्ट हो जाते हैं, ऐसा जन सामान्य में विश्वास है। सर्वप्रथम इस पर्वत की परिक्रमा भरत ने की थी। ऐसा प्रतीत होता है कि तभी से इस पर्वत की परिक्रमा होती रही हो जिसे कालान्तर में बुन्देला राजा छत्रसाल की पत्नी चाँदकुँवरि ने 1725 ई. में पथरीला पैदल मार्ग का स्वरूप दिया जिसका समय–समय पर जीर्णोद्धार किया गया। आज शेड युक्त सुगम मार्ग है। प्रत्येक अमावस्या को श्रद्धालुओं द्वारा परिक्रमा की जाती है। आज भी कामद गिरि पर्वत अनेक प्रकार के जंगली वृक्षों, पक्षियों, बन्दरों तथा लंगूरों से युक्त है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चित्रकूट सूचना, कोष, अर्थ एवं संख्याधिकारी कार्यालय चित्रकूट, 2006–07, पृ .1
2. रामचरितमानस, ।।, 279.1
3. रामायण, 2.54.27 यावता चित्र कूटस्थ नरः शृङ्गाव्यवेक्षते। कल्याणा निस मा धत्तेन पापे कुरुते मनः
4. वराह पुराण, 12.2
5. नरसिंह पुराण, 65.9
6. भट्टि काव्य, 65.9
7. रामायण, 2.85.13,14
8. रामायण, 2.94.4

9. रामायण, 2.94.23
10. रामायण, 2.94.5,6
11. रघुवंश, 13.5 4
12. विनय पत्रिका, 24.6, कामद मनि कामता कलप तरु, सो जुग जुग जागत जगती तलु।
13. रामचरित मानस, 2.132 , चित्रकूट जनु अचल अहेरी। चुकै न घात मार मुठभेरी।
14. रामायण, 2.105.3
15. उपाध्याय, डॉ. महेन्द्र कुमार, 'चित्रकूटः ऐन आर्कियो रिलीजियस स्टडी' नई दिल्ली, 2014, पृ.सं.65

*****